OM 19 a_Page 1 and 2 14/01/2015 09:46 Page 9

कथा सरिता

दया व क्षमा के साथ शिक्षा

संत तिरुवल्लुवर जुलाहा थे। वे प्रतिदिन तैयार कपड़ा बाज़ार में लाया करते और उसे बेचकर अपनी आजीविका चलाते। एक दिन एक युवक बाज़ार में संत के पास पहुँचा। संत की विनम्रता और साधुता को ढ़ोंग समझ उसने परीक्षा लेने की सोची। एक साड़ी उठाकर उसने दाम पूछा। संत ने मूल्य एक रुपया बताया। युवक ने उसके दो टुकड़े कर दिए और फिर से उसका दाम पूछा। संत ने दाम आठ आना बता दिया। उसने कपड़े के फिर से दो टुकड़े कर दिए और एक का दाम पूछा। संत ने शांत चित्त से चार आने बता दिया।

इस प्रकार उस युवक ने कपड़े के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और उसका मूल्य भी नगण्य होता चला गया। संत फिर चुप हो गए। युवक ने अपना धन प्रदर्शित कर दो रुपये देते हुए कहा-यह रहा तुम्हारे कपड़े का मूल्य। संत की आँखों में आँसू आ गए। वे बोले-भाई, जब तुमने साड़ी खरीदी ही नहीं, तो मैं उसका मूल्य कैसे ले सकता हूँ? युवक को भी पश्चाताप होने लगा। तब संत बोले-बेटा, ये दो रुपये क्या उस मेहनत का मूल्य दे सकते हैं जो इस साड़ी में लगी है? इसके लिए किसान ने सालभर खेत में पसीना बहाया है। मेरी पत्नी ने उसे कातने और धुनने में दिन-रात एक किए। मेरे बेटे ने उसे रंगा और मैंने ताने-बाने पर उसे साड़ी का रूप दिया।

यह सुनते-सुनते उस युवक की आँखों में आँसू छलक आए। उसने संत से क्षमा मांगी और भविष्य में इस प्रकार का व्यवहार किसी से न करने की प्रतिज्ञा ली। युवक ने अंत में पूछा-आप मुझे पहले ही रोककर यह बात कह सकते थे, फिर आपने ऐसा क्यों नहीं किया? संत ने जवाब दिया-यदि मैंने तुम्हें पहले ही रोक दिया होता, तो तुम्हारा संशय पूरी तरह से नष्ट न होता और तुम शिक्षा को यथेष्ठ तरीके से आत्मसात नहीं कर पाते। दया और क्षमा के साथ दी गई शिक्षा व्यक्ति को बदलकर रख देती है और उसका प्रभाव भी अचूक होता है।

एक क्षण ही पर्याप्त

एक डाकू साथियों के साथ रेगिस्तान में रहता था। वहाँ से व्यापार के लिए असबाब लेकर गुजर रहे व्यापारियों और राहगीरों के काफिलों को लूटना उसका पेशा था। उसकी यह आदत थी कि लूट के माल में जो चीज़ पसंद आती, वह उसे अपने लिए रख लेता और बाकी की सब वस्तुएं साथियों में बांट देता।

पेशे से लुटेरा होने के बावजूद वह धार्मिक व्यक्ति था और नियमित भगवान का स्मरण किया करता था। वह एक बार एक लड़की के प्रेम में पड़ गया। वे दोनों मिला करते और इस अवसर पर वह अक्सर अपनी प्रेमिका को तोहफे दिया करता। अमूमन तोहफे लूटे हुए माल से होते और इस प्रकार उनका प्रेम बढ़ता गया।

एक दिन जब वह लूट के माल में से सर्वश्रेष्ठ तोहफा लेकर प्रेमिका के पास पहुँचा तो रात हो चुकी थी और जिस कबीले में उसकी प्रेमिका रहती थी वहाँ कोई व्यक्ति उपासना कर रहा था। सरदार ने उस व्यक्ति को भगवान से प्रार्थना में कहते सुना-क्यों नहीं आया ऐसा वक्त ईमानवालों के लिए कि उनका दिल खुदा के खौफ से डरे।

डाकू के कानों में ये शब्द पड़ने भर की कमी थी कि उसे अपनी भूल मालूम हुई। मानो उस एक क्षण में यकायक उसे सारी ज़िन्दगी में किए गुनाहों का एहसास हो गया। उसका अंतर्मन उससे कहने लगा-बेगुनाहों को लूटने में सारी ज़िन्दगी बर्बाद कर दी, अब तो होश में आ जा और नेकी और बंदगी के रास्ते पर चल। डाकू ने उसी दिन से लूटपाट छोड़ दी। बाद में वह एक संत के रूप में भी प्रसिद्ध हुआ। मानव मन विविध अनुभवों को ग्रहण करने वाला होता है। वह क्रोध और हिंसा कर सकता है तो उसमें प्रेम और करुणा भी होती है। महत्वपूर्ण होता है जीवन को मिलने वाला मार्गदर्शन। समय पर मिली एक सलाह या संकेत मानव को दुष्ट से संत बना सकती है।

दुआ सर्व-कल्याणकारी हो

रब्बी इसाक, रब्बी नहमन के मित्र ही नहीं मार्गदर्शक भी थे। एक दिन नहमन ने अध्ययन के पश्चात् इसाक से स्वयं के लिए दुआ करने को कहा। रब्बी इसाक ने जवाब में एक कहानी सुनानी शुरु की। एक व्यक्ति किसी रेगिस्तान में यात्रा कर रहा था। उसके पास भोजन समाप्त हो गया, तभी उसे वहाँ एक पेड़ दिखाई दिया। जिस पर पके हुए फल लगे थे। उसने उस पेड़ के मीठे और रसीले फल खाए और वहीं छांव में आराम करने लगा। नींद से उठकर उसने पेड़ के नीचे एक जलस्त्रोत से पानी पिया। उसने बेहतर महसूस किया और बोला-मैंने जीवन में ऐसे मधुर फल नहीं खाए। जब मेरे प्राण संकट में थे तब इस वृक्ष ने मुझे भोजन और आराम करने के लिए आश्रय दिया। मैं कैसे अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करूँ? क्या दुआएं दूँ? रब्बी इसाक, नहमन से बोले-क्या उस आदमी को यह दुआ करनी चाहिए कि उस वृक्ष के फल और मीठे हों? यह मूर्खता होगी क्योंकि उसके फल वह पहले ही चख चुका है। यदि यह दुआ दे कि तुम और अधिक छायेदार बनो तो वह पहले ही उसकी छाया में आराम कर चुका है और यदि वह यह कहे कि तुम्हारी जड़ों के पास जलस्त्रोत बना रहे, तो वह भी मौजूद है।

रब्बी नहमन ने पूछा-आप ही बताएं कि उस पेड़ को क्या दुआ दूँ? रब्बी इसाक ने कहा-मेरे मित्र, तुम्हें यह दुआ करनी चाहिए कि सभी पेड़ इस वृक्ष के समान कल्याणकारी बनें और यही बात तुम पर भी लागू होती है। मैं तुम्हारे लिए क्या दुआ करूँ? तुम्हें ज्ञान की दुआ दूँ तो वह तुम्हारे पास मौजूद है। धन का आशीर्वाद दूं तो वह भी तुम्हारे पास है। तुम्हें बाल-बच्चों की दुआ दूं तो तुम्हें पहले से ही बच्चे हैं। हाँ मैं यह दुआ करता हूँ कि तुम्हारे बच्चे तुम्हारी तरह ही बड़े हों और वे भी दूसरों के कल्याण के लिए कार्य करें। दुआ किसी के लिए सुख की कामना मात्र नहीं है, वह तो कल्याण भाव के विकास की प्रार्थना होती है।

सज्जनता का प्रभाव सूक्ष्म

एक राजा को कोई असाध्य बीमारी हो गई। वैद्यों को बताया तो उन्होंने रोग को कोढ़ बताया। कई निदान बताए गए, लेकिन किसी से कोई असर होते न दिखा। राजवैद्य ने कहा-महाराज, इस रोग का एक ही इलाज है। यदि आप राजहंस के मांस का भक्षण करें तो इस बीमारी से मुक्ति पा सकते हैं। राजहंस को पाना आसान न था। किसी जानकार ने बताया कि वे तो मानसरोवर में पाए जाते हैं, वहाँ कोई विरला साधु-संत ही जा पाता है।

कुछ साधुओं से राजा को धर्म का स्वरूप बताकर कुछ राजहंस ले आने के लिए कहा गया, लेकिन कोई भी इसके लिए तैयार न हुआ। अंत में एक बहेलिया साधु का भेष धारणकर मानसरोवर जाकर राजहंस लाने के लिए राजी हुआ।

मानसरोवर में राजहंस साधु-संतों से घुले-मिले थे। वे न किसी से भयभीत होते थे, न अजनबियों को देख दूर भागते थे। बहेलिये ने बिना किसी प्रयत्न के बहुत से राजहंसों को पकड़ लिया और उन्हें राजा के सामने प्रस्तुत कर दिया।

राजहंसों का सहज स्वभाव देख राजा के मन पर भारी प्रभाव पड़ा। उसने सोचा जो जीव संतों के प्रभाव से इस तरह अहिंसा में प्रतिष्ठित हो गए हैं कि उन्हें अपने घातक शत्रु से भी भय नहीं लगता, खुद की मृत्यु के भय से उन्हें मारना कितना बेतुका है। उसने राजहंसों को मुक्त कर दिया।

यह देखकर बहेलिये के मन पर भी भारी प्रभाव पड़ा। उसने सोचा राजहंसों के स्वभाव से प्रभावित हो राजा अपने रोग के निदान हेतु हिंसा से विरत हो गया, वे राजहंस उसके झूठे संतवेश के प्रभाव से ही निर्भय हो गए, वह संत भाव यदि वास्तव में उपलब्ध हो जाए तो कितना शांतिकारक होगा। बहेलिया सब कुछ त्यागकर जंगल चला गया और साधु बन गया।

संत स्वभाव की महिमा ऐसी ही है। ज्ञानी-मानी, पंडित-मूढ़ ही नहीं पशु-पक्षी तक उससे अप्रभावित नहीं रह पाते। वे संपर्क में आने वाले हर जीव में आमूल परिवर्तन कर देते हैं।

सोनई-राहूरी। महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम सी.विद्यासागर राव '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुड्नेस' के संकल्प पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. उषा तथा ब्र.कु. दीपक।

तासगांव। अंतर्राष्ट्रीय एड्स जागृति दिवस पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ. वैशाली। साथ हैं प्लांट मैनेजर पी.मांगीलाल तथा अन्य।

दुर्ग-छ.ग.। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए आर. संगीता,कलेक्टर, अमित शांडिल्य,केन्द्रीय जेल अधीक्षक, ब्र.कु. रीटा तथा अन्य।

नागपुर-महा.। 'सात अरब सत्कर्मों की महायोजना' का उद्घाटन करते हुए धर्मपाल अग्रवाल,प्रतिष्ठित व्यवसायी तथा समाजसेवी, राजीव घटोले,डिस्ट्रिक्ट कंट्रोलर,एस.टी. महामंडल, डॉ. शिव स्वरूप,रिजनल डायरेक्टर,इंदिरा गांधी ओपेन यूनिवर्सिटी, गोपाल बोहरे,सभापति, महानगरपालिका, ब्र.कु. रामप्रकाश सिंघल तथा ब्र.कु. पुष्पारानी।

पिंपरी-पुणे। 'गृहस्थ जीवन में परमार्थ कैसे करें' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सरिता।

मांडवी-कच्छ। सोशल वुमेन्स ग्रुप द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए ब्र.कु. उषा। मंच पर उपस्थित ग्रा.पं. सरपंच प्रभा पटेल, कांग्रेस महिला प्रमुख दमयंती गुसाई, जिवदया महिला ग्रुप प्रमुख रेश्मा शाह, बाग महिला अग्रणी मीना नाकर, राजगोर महिला मंडल प्रमुख शिल्पा नाथाणी।